50वीं वर्षगांठ समारोह
एईन रेंड लिखित एटलस श्रॉग्ड
50th Anniversary Celebrations
Atlas Shrugged by Ayn Rand

(1957-2007)

(Draft of Hindi translation, of the "meaning of money speech", from Atlas Shrugged, by Ayn Rand. Translation prepared by Deepa Pathak at the request of Liberty Institute, New Delhi.)

पैसे के मायने:

कैसा है ये पैसा ?

एईन रेंड

(एटलस श्रॉग्ड, 1957 से लिये गए अंश, Extracted from Atlas Shrugged, published in 1957)

" तो तुम सोचते हो कि सारे पापों की जड़ पैसा ही है? फैंसिस्को द'अंकोनिया ने कहा। " क्या तुमने कभी पूछा है कि खुद इस पैसे की जड़ कहां है? पैसा अदला-बदली का उपकरण है, और यह तभी हो सकता है जब पैसे के बदले में देने के लिए चीजें हों और आदमी उन चीजों का उत्पादन करने में सक्षम हो। पैसे का आधार यह सिद्धांत है कि जो लोग एक दूसरे के साथ व्यापार करते हैं, उन्हें चीजों का सही मूल्य आंकना चाहिए। परजीवियों की तरह नोंच-खसोट कर आपकी चीजों पर हक जमाने वाले लोगों या ताकत के बल पर डरा कर चीज हड़पने वाले लुटेरों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला औज़ार नहीं है पैसा। पैसा उन लोगों की वजह से संभव है जो चीजों का उत्पादन कर सकते हैं। क्या इसे तुम पाप मानते हो? "

" जब तुम अपने काम के बदले पैसा स्वीकार करते हो तो तुम ऐसा इस विश्वास के साथ करते हो कि तुम यह पैसा दूसरे लोगों की मेहनत से तैयार चीजों के बदले में उन्हें दोगे। आंसू बहाने वाले या लुटेरे पैसे का मोल नहीं समझते। आंसुओं का सागर या दुनिया की सारी बंदूकें आपके बटुए में भरे काग़ज को उस रोटी के टुकड़े में नहीं बदल सकते जो जिंदा रहने के लिए जरूरी है। काग़ज के वे टुकड़े, जिन्हें सोने का होना चाहिए, दरअसल उस आदमी की मेहनत, के प्रति सम्मान जताने का माध्यम है, जो उसने चीजें तैयार करने में लगाई है। तुम्हारा बटुआ इस उम्मीद को ज़ाहिर करता है कि तुम्हारे चारों ओर फैली इस दुनिया में ऐसे लोग हैं जो उस नैतिक सिद्धांत के साथ ग़लत नहीं करेंगे जो पैसे की जड़ है, क्या इसे आप पाप मानेंगे? "

" क्या तुमने कभी यह जानने की कोशिश की है कि उत्पादन की जड़ कहां है? जरा बिजली के जनरेटर पर एक नज़र डाल कर देखो और खुद से कहने की हिम्मत करो कि इसे बिना दिमाग वाले कुछ लोगों ने बस शारीरिक ताकत भर से बना डाला। आदमी ने सबसे पहले खेती के बारे में जो बातें सीखीं थी जरा उन जानकारियों के बिना गेहूं का एक बीज उगा कर दिखाइए। केवल शारीरिक ताकत के ज़रिए अपने लिए खाना जुटाने की कोशिश करो, तब तुम यह सीख सकोगे कि सारी चीजों के उत्पादन और दुनिया में मौजूद सारी दौलत की जड़ में इंसान का दिमाग है।"

" लेकिन तुम कहते हो कि ताकतवर लोग गरीब लोगों का हक मार कर पैसा बनाते हैं? तुम्हारा मतलब किस ताकत से है? यह बंदूक की ताकत या बाहुबल नहीं है। दौलत, आदमी के सोचने की ताकत का परिणाम है।

तब क्या मोटर का अविष्कार करने वाले आदमी द्वारा कमाया गया पैसा उन लोगों के प्रति अन्याय होगा जिन्होंने मोटर का अविष्कार नहीं किया? क्या बुद्धिजीवियों का कमाया हुआ पैदा बेवकूफ लोगों के प्रति अन्याय माना जाएगा? सक्षम लोगों की कमाई अयोग्य लोगों पर अन्याय होगा? महत्वाकांक्षी लोगों का पैसा आलसियों के हक को मारना माना जाएगा? इससे पहले कि उसे मांगा या लूटा जा सके, पैसे को कमाया जाता है। हर ईमानदार आदमी अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर पैसा कमाता है। एक ईमानदार आदमी वह है जो यह जानता है कि वह उतना ही उपभोग कर सकता है जितने का वह उत्पादन करता है।"

" पैसे के माध्यम से व्यापार करना ईमानदार आदमी का तरीका है। पैसे का सिद्धांत इस स्वंयसिद्ध तथ्य पर आधारित है कि हर आदमी अपने दिमाग और अपनी मेहनत का मालिक है। पैसा किसी को तुम्हारी मेहनत का मूल्य निर्धारित करने की अनुमति नहीं देता सिवाय उस आदमी के जो अपनी मर्ज़ी से अपनी मेहनत के उत्पाद के बदले में तुम्हारे साथ सौदा करना चाहता है । पैसा तुम्हें अपनी चीज़ों और मेहनत के बदले में उचित पारिश्रमिक लेने के अनुमति देता है, क्योंकि वे चीज़ें खरीदारों के लिए उपयोगी हैं, लेकिन उससे ज़्यादा नहीं। पैसा सिवाय ऐसे, जिसमें व्यापारियों की मर्ज़ी से तय फैसलों के आधार पर दोनों पक्षों को फायदा मिले, किसी सौदे की अनुमति नहीं देता।"

"पैसा तुमसे इस बात को मान्यता देने की मांग करता है कि आदमी को काम ज़रूर करना चाहिए खुद के फायदे के लिए, खुद को क्षति पहुंचाने के लिए नहीं, कमाई के लिए, नुकसान के लिए नहीं. पैसा इस बात की स्वीकारोक्ति चाहता है कि इंसान, जानवर नहीं है जो भार हो, कि आदमी अपनी गरीबी का भार उठाने के लिए जन्मा है, कि आदमी को कीमत मिलनी चाहिए, चोट नहीं, कि इंसानों को जोड़ने वाला साझा बंधन एक-दूसरे के साथ अपनी परेशानियों का आदान-प्रदान का नहीं बल्कि चीज़ों की अदला-बदली का है। पैसा मांग करता है कि तुम अपनी कमज़ोरी को आदमी की बेवकूफी के बदले मत बेचो, बल्कि अपने हुनर को खरीदादों की उपयोगिता के लिए बेचो। यह मांग करता है कि तुम खरीदो, लेकिन वह घटिया सामान नहीं जो दूसरे बेच रहे हैं बल्कि वह बेहतरीन सामान जो तुम्हारा पैसा ढूंढ सकता है। और जब आदमी तर्क को, न कि दबाव को, अपना अंतिम नीति-निर्धारक मान कर व्यापार करता है तो वही उत्पाद जीतता है जो सबसे अच्छा होता है, जिसका प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ होता है। सबसे बेहतर फैसले करने वाला और उच्चतम क्षमता वाला व्यक्ति ही विजेता होता है। जिस कोटि की व्यक्ति की उत्पादकता होगी उसी स्तर का उसका पुरस्कार होगा। यह जीवन के अस्तित्व का नियम है जिसका औज़ार और प्रतीक पैसा है। क्या तुम इसको बुरा समझते हो? "

" लेकिन पैसा केवल एक औज़ार भर है। यह जहां तुम चाहो वहां तक ले जाएगा लेकिन वह तुम्हें चालक की जगह नहीं देगा। यह तुम्हारी इच्छाएं पूरी करने के साधन मुहैया कराएगा लेकिन यह तुम्हें इच्छाएं नहीं देगा। पैसा उनके लिए चाबुक है जो तर्क आधारित कानून को उल्टा करने की कोशिश करते हैं और दिमाग की जगह दिमाग की ताकत से तैयार चीज़ों को महत्वपूर्ण मानते हैं।"

"पैसा उस आदमी के लिए खुशी नहीं खरीद सकता जिसे पता ही नहीं है कि उसे चाहिए क्या, अगर वह यह नहीं समझना चाहेगा कि वह किन चीजों को मूल्यवान मानता है तो पैसा उसे यह नहीं समझाएगा। अगर वह यह चयन नहीं कर सकता कि वह किस चीज़ की इच्छा करे तो पैसा इसमें आदमी की कोई मदद नहीं कर सकता। पैसा बेवकूफ आदमी के लिए समझदारी, कायर के लिए प्रशंसा या अयोग्य व्यक्ति के लिए सम्मान नहीं खरीद सकता। जो व्यक्ति खुद फैसला लेने की जगह पैसे की ताकत से अपने से बेहतर दिमाग वाले व्यक्तियों की सेवा खरीदने की कोशिश करता है, वह अंत में अपने से भी गए-गुज़रे लोगों का शिकार बनता है। बुद्धिमान व्यक्ति उसका साथ छोड़ देते हैं लेकिन बेईमानी और धोखेबाजी उसके पीछे होते हैं, उस

कानून के तहत, जिसका उसे पता नहीं है, कि कोई भी आदमी अपने पैसे से छोटा नहीं हो सकता। क्या यही वजह है जो तुम इसे बुरा कहते हो? "

" केवल वह आदमी जिसे उसकी जरूरत नहीं है, विरासत में दौलत पाने के योग्य है, वह आदमी अपना संपत्ति खुद बनाएगा, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि उसने शुरुआत कहां से होती है। अगर कोई वारिस पुरखों से मिली दौलत को संभालने में समर्थ है तो पैसा उसकी सेवा करेगा, अगर नहीं तो वही पैसा उसे बरबाद कर देगा। लेकिन तुम यह देख कर कहते हो कि पैसे ने उसे भ्रष्ट कर दिया। लेकिन क्या सचमुच? या फिर उसने अपने पैसे को भ्रष्ट किया? एक अयोग्य वारिस से ईर्ष्या मत करो, उसकी दौलत तुम्हारी नहीं है और तुम भी उसका बेहतर उपयोग नहीं कर पाते। मत सोचो कि इस धन को तुम सब के बीच बांट दिया जाना चाहिए था। दुनिया पर एक की बजाय पचास परजीवियों का भार बढ़ाने से खत्म हो चुकी वह मूल चीज़, दौलत, वापस नहीं आएगी। पैसा एक जीवित शक्ति है, जिसकी अगर जड़ न हो तो वह मर जाती है। पैसा उस दिमाग की सेवा नहीं करेगा जो उसके लायक नहीं है। क्या यह कारण है जो तुम इसे पाप कहते हो? "

" पैसा तुम्हारा जीने का एक साधन है। अपनी आजीविका के स्रोत के लिए तुम्हारे जो विचार हैं वही विचार तुम्हारे अपने जीवन के लिए होंगे। अगर तुम्हारी कमाई का ज़रिया भ्रष्ट है तो तुमने अपना जीवन नष्ट कर लिया है। क्या तुम धोखेबाजी से पैसा कमाते हो? या तुमने दूसरे लोगों के पापों और उनकी बेवकूफियों की दलाली कर कमाई की? या अपनी योग्यता से ज्यादा कमाने की उम्मीद में बेवकूफों की सेवा करके कमाया? या अपने स्तर से नीचे जा कर आजीविका कमाई? या ऐसा काम करके कमाया जिससे तुम्हें नफ़रत है, या ऐसे लोगों के लिए काम करके जिनसे तुम घृणा करते हो? अगर ऐसा है तो तुम्हारा पैसा तुम्हें एक भी पल के लिए, एक भी पैसे के मूल्य का सुख नहीं दे सकता। ऐसे में वो सभी चीजें जो तुम खरीदते हो, वो तुम्हारे लिए उपहार नहीं बल्कि निंदा का सबब होंगी, तुम्हारी उपलब्धि नहीं बल्कि शर्म का कारण होंगी। तब तुम चिल्लाओगे कि पैसा बुरा है। बुरा, क्योंकि यह तुम्हारे आत्मसम्मान के लिए काम नहीं करता? पाप, क्योंकि यह तुम्हें तुम्हारे भ्रष्ट आचरण का आनंद नहीं लेने देता? क्या पैसे से तुम्हारी नफरत की यही वजह है? "

" पैसा हमेशा एक प्रभाव ही बना रहेगा, वह कारण की जगह नहीं लेगा, कारण हमेशा आदमी ही रहेगा। पैसा खुद तो नैतिकता का उत्पाद है, लेकिन यह तुम्हें शुद्ध नहीं कर सकता और यह तुम्हारे पापों से तुम्हे मुक्त नहीं कर सकता। पैसा तुम्हें वह नहीं दे सकता जो तुमने नहीं कमाया, न तो दुनियादारी के तौर पर और न ही आत्मिक रूप में। क्या यही पैसे से तुम्हारी घृणा का कारण है? "

" या फिर तुमने यह कहा कि दरअसल पैसे के लिए प्यार ही सारी बुराइयों की जड़ है? किसी चीज़ को प्यार करना उसे जानना और उसकी प्रकृति को प्यार करना है। पैसे को प्यार करना यह जानना और इस बात को चाहना है कि पैसा तुम्हारे भीतर की बेहतरीन शक्तियों से तैयार हुई कृति है। यह तुम्हें तुम्हारी मेहनत के परिणाम को दूसरे लोगों के प्रयासों से तैयार सर्वश्रेष्ठ चीजों के साथ अदला-बदली करने में सक्षम बनाने वाली चाबी है। अपनी आत्मा को कौड़ियों के दाम पर भी बेचने वाला आदमी ही सबसे ऊंची आवाज़ में पैसे के प्रति अपनी नफ़रत का इज़हार करेगा, और ऐसा करने के पीछे उसके पास वजह भी है। जो पैसे को प्यार करते हैं वे उसे कमाने के लिए मेहनत करने के लिए भी तैयार हैं। वो जानते हैं कि वे पैसे की अपनी इच्छा पूरी करने में सक्षम हैं।"

" मुझे आदमी के चरित्र का पता देने वाली एक युक्ति बताने दीजिए, जो आदमी पैसे की बुराई करता है वह उसे बेईमानी से प्राप्त करता है, वही आदमी पैसे की इज्ज़त करता है जो उसे कमाता है।"

" ऐसे आदमी से दूर रहो जो कहता है कि पैसा बुरा है। जब से दुनिया में आदमी रह रहे हैं और एक दूसरे के साथ व्यापार करना चाहते हैं तो उनके पास इसके लिए एकमात्र विकल्प, अगर वे पैसे का इस्तेमाल न करना चाहें, केवल हथियार ही बचते हैं।"

" लेकिन पैसा तुमसे उच्च स्तर की नैतिकता की मांग करता है, अगर तुम पैसा कमाना चाहते हो या उसे बनाए रखना चाहते हो। जिन लोगों में साहस नहीं है, आत्मसम्मान या उत्साह नहीं है, जिन लोगों में पैसे पर अपने अधिकार के लिए नैतिक जिम्मेदारी का भाव नहीं है और वे उसे अपने प्राणों की तरह बचाने के लिए तैयार नहीं हैं, जो लोग अपने धनी होने पर अपराध भाव से ग्रस्त हैं, वे ज़्यादा समय तक अमीर नहीं बने रह सकते। वे लोग लुटेरों के स्वाभाविक शिकार होते हैं। ये लुटेरे सदियों से छिपे होते हैं और अपने धनी होने पर शर्मिंदा आदमी का सुराग मिलते ही अपने छिपे ठिकानों से रेंग कर बाहर आने लगते हैं। ये लुटेरे उस धनी आदमी को उसके अपराध-बोध और उसके जीवन से मुक्त करने में कोई देर नहीं लगाएंगे, और वह इसी के योग्य है।"

ऐसे हालात में फलते-फूलते हैं दोहरे मापदंडों वाले आदमी, जो खुद तो केवल ताकत के दम पर जीते हैं, लेकिन निर्भर होते हैं व्यापार के सिद्धांत पर जीने वाले लोगों पर। लूट कर कमाई दौलत को मूल्यवान बनाने के लिए वे व्यापार की नैतिकता का फायदा उठाना चाहते हैं। एक नीतिवादी समाज में ऐसे लोग अपराधी हैं, और उनसे आपको सुरक्षित रखने के लिए कानून बनाए गए हैं। लेकिन जब कोई समाज ऐसे, अपराधियों को अधिकार संपन्न बनाता है और लुटेरों को कानून का सहयोग देता है, जो बलपूर्वक निहत्थे लोगों की दौलत लूटते हैं, तो वह पैसा उसे पैदा करने वाले का विरोधी हो जाता है। ऐसे लुटेरे सोचते है कि निहत्थे लोगों को लूटना सुरक्षित है। लेकिन उनकी लूट, दूसरे लुटेरों को उकसाने का काम करती है। निहत्थों से लूटा माल दूसरे लुटेरे उनसे लूट लेते हैं। यह सिलसिला जारी रहता है, इसमें जीत सबसे सक्षम की नहीं बल्कि निर्दयता में सबसे क्रूर लुटेरे की होती है। जब ताकत क्षमता का पैमाना होगी तो जीत हत्यारों की होगी पॉकेटमारों की नहीं। और तब ऐसा समाज विनाश और हत्या के बीच समाप्त हो जाता है।"

"तुम जानना चाहते हो कि क्या विनाश का वह दिन आ गया है ? इसके लिए पैसे पर नज़र रखो। पैसा किसी समाज की नैतिकता को आंकने का पैमाना है। जब तुम देखते हो कि व्यापार स्वेच्छा से नहीं बल्कि अनिवार्यता के तहत किया जा रहा है, जब तुम देखते हो कि उत्पादन के लिए तुम्हें ऐसे लोगों से अनुमति लेनी जरूरी है जो खुद कोई उत्पादन नहीं करते, जब तुम देखते हो कि पैसा उन लोगों के पास जा रहा है जो चीजों का नहीं बल्कि आपसी फायदे का लेन-देन कर रहे हैं, जब तुम देखते हो कि लोग अपने काम के दम पर नहीं बल्कि बेइमानी से अमीर हो रहे हैं, और तुम्हारा कानून तुम्हें उन लोगों से कोई सुरक्षा नहीं देता बल्कि तुम्हारे खिलाफ उन्हें सुरक्षित करता है, जब तुम देखते हो कि भ्रष्टाचार को पुरस्कृत किया जा रहा है और ईमानदारी की बलि दी जा रही है - तब जान लेना चाहिए कि समाज की बरबादी निश्चित है। पैसा इतना पवित्र माध्यम है कि वह बंदूकों से मुकाबला नहीं कर सकता और यह क्रूरता के साथ समझौता नहीं कर सकता। यह किसी देश को आधे पैसे आधी लूट पर जीने देने की मंजूरी नहीं देगा।"

" जब भी विनाशकर्ता लोगों के बीच आते हैं, वे पैसे को बरबाद करने के साथ शुरुआत करते हैं क्योंकि पैसा व्यक्ति का सुरक्षाकवच और एक नैतिक जीवन का आधार है। वे सोने को अपने कब्ज़े में ले लेते हैं और उसके मालिक के पास जाली कागजों का पुलिंदा छोड़ जाते हैं। उनका यह कृत्य सभी उद्देश्यों को खत्म कर देता है और आदमी को मूल्यों की मनमानी व्याख्या करने वाले लोगों की शक्ति पर निर्भर बना देता है।

सोना एक वस्तुगत मूल्य था, जो उत्पादित दौलत के समकक्ष था । जबकि कागज़ गिरवी रखी उस दौलत के बदले है जिसका अस्तित्व ही नहीं है। इसके समर्थन में एक बंदूक है जो उन लोगों पर तनी हुई है जिनसे उत्पादन करने की अपेक्षा है। कागज एक चेक है जो कानूनी लुटेरे उस एकांउट से ले रहे हैं जो उनका है ही नहीं, वे अत्याचार के शिकार लोगों की नैतिकता का फायदा उठा रहे हैं। उस दिन का इंतज़ार कीजिए जिस दिन यह चेक बाउंस होगा और उस पर लिखा होगा 'एकाउंट में पैसा नहीं बचा'।"

" जब तुमने आजीविका के साधन को ही बुरा बना दिया, तो आदमी के अच्छे बने रहने की उम्मीद मत करो। यह आशा मत लगाओ कि आदमी नैतिक बने रहेंगे और भ्रष्टाचारियों के लिए चारा बनने के उद्देश्य से अपना जीवन खत्म कर लेंगे। उनसे उत्पादन करने की उम्मीद मत लगाओ, जब उत्पादन करने वाले को सज़ा और लुटेरों को पुरस्कृत किया जा रहा हो। यह मत पूछो कि, "इस दुनिया को कौन बरबाद कर रहा है? तुम कर रहे हो। "

" सर्वश्रेष्ठ उत्पादक सभ्यता की सर्वोत्तम उपलब्धियों के बीच खड़े हो तुम पैसे को कोस रहे हो और आश्चर्य कर रहे हो कि तुम्हारे चारों ओर सब भरभरा कर क्यों ढह रहा है।? तुम पैसे को ऐसे देखते हो जैसे तुमसे पहले रहने वाले असभ्यों ने इसे देखा और तुम चकित हो कि जंगल क्यों वापस तुम्हारे शहर के मुहाने तक पहुंच गए हैं। मानव सभ्यता के पूरे इतिहास में पैसा हमेशा किसी न किसी तरह के लुटेरों के पास ही रहा, जिनके नाम चाहे बदलते रहे लेकिन पैसा पाने का उन सबका तरीका एक ही था, बलपूर्वक दौलत लूट कर उत्पादकों को बंधक बनाना, उन्हें नीचा दिखाना, उनकी बेइज़्ज़ती करना और उन्हें सम्मान से वंचित रखना।

" पैसे की बुराई के बारे में जिसे तुम इतने न्यायसंगत लापरवाही के साथ बोलते हो, वो कहावत दरअसल उस समय उपजी, जब दौलत गुलाम बनाए गए लोगों की मेहनत से बनती थी। ये गुलाम, एक समय में किसी के दिमाग द्वारा विकसित तरीके को ही बार-बार इस्तेमाल करते थे जिसकी वजह से सदियों तक इसमें कोई सुधार नहीं हुआ। जब तक उत्पादन बलपूर्वक कराया जाता रहा और पैसा ताकत से प्राप्त किया जाता रहा, तब तक जीतने के लिए खास कुछ था ही नहीं। उसके बावजूद निष्क्रियता और भुखमरी की उन शताब्दियों के दौरान आदमी ने लुटेरों की कई तरह से प्रशंसा की। कभी उन्हें वीरता के लिए सम्मानित किया, कभी उन्हें उच्चकुलीन वर्ग का दर्ज़ा दिया कभी उन्हें नौकरशाही के अभिजात्य वर्ग में रखते हुए महत्वपूर्ण माना। जबकि उत्पादकों को गुलाम, व्यापारी, दुकानदार और उद्योगपति मान कर नफ़रत की।

"मानवता के गौरव के लिए, पहली बार और इतिहास में केवल एक बार, एक देश था जिसने पैसे के सिद्धांत को सम्मान दिया, इसके लिए अमेरिका के प्रति यह मेरा श्रद्धापूर्ण सम्मान है। उद्देश्य, न्याय, आज़ादी, उत्पादन और उपलब्धि का देश अमेरिका। पहली बार, आदमी के दिमाग और पैसे को मुक्त किया गया, वहां कोई ताकत के दम पर नहीं बल्कि काम के बल पर अमीर बन सकता था। जहां हथियारबंद आदमियों और गुलामों की जगह वास्तव में पैसा कमाने वाले लोग सामने आए, बेहतरीन श्रमिक, सर्वश्रेष्ठ किस्म के इंसान, अपनी मेहनत से बने आदमी- अमेरिकी उद्योगपति।

" अगर मुझसे अमेरिकियों की सबसे सम्मानजनक विशेषता पूछी जाए, तो मैं इस तथ्य को चुनूंगी कि ये ही वो लोग थे जिन्होंने "पैसा बनाना" ये मुहावरा ईज़ाद किया। इसी एक बात में अमेरिकियों की तमाम अन्य खूबियां भी निहित हैं। किसी भी अन्य भाषा या देश ने पहले इन शब्दों को इस्तेमाल नहीं किया था। आदमी ने दौलत को हमेशा एक स्थिर वस्तु के रूप में देखा जिसे अपने कब्ज़े में किया जा सकता है, मांग कर, विरासत में पा कर, बांट कर, लूट कर या किसी पर कृपा के बदले प्राप्त किया जा सकता है। अमेरिकी

पहले लोग थे जिन्होंने इस बात को समझा कि दौलत को बनाया जाता है। "पैसा बनाना" इन शब्दों में मानव की नैतिकता का सार छिपा है।"

" इसके बावजूद यही वे शब्द थे जिनके लिए लुटेरों के साम्राज्य की सड़ी-गली व्यवस्था में अमेरिकियों को अपमानित किया जाता रहा। लुटेरों की व्यवस्था में आदमी को अपनी सबसे गर्वपूर्ण उपलब्धियों पर शर्मिंदा होने, खुद के सपन्न होने पर ग्लानि करने, अपने सबसे महान लोगों यानी उद्योगपतियों को बदमाश समझने को कहा जाता है। वे शानदार फैक्ट्रियों को, केवल शारीरिक शक्ति का उत्पाद व संपत्ति समझते हैं, जो गुलामों पर चाबुक बरसा कर कराई गई जबरन मेहनत से चलती हैं, जैसे मिस्र के पिरामिड। भ्रष्टाचारी को, जो भद्दी मुस्कराहट के साथ कहता है कि उसे डॉलर की ताकत और चाबुक की ताकत में कोई फर्क ही नज़र नहीं आता, इन दोनों के बीच का अंतर खुद ही सीखना होगा, जो मुझे लगता है वह सीखेगा।

"जब तक तुम इस बात को जान नहीं लेते कि पैसा ही सारी अच्छाइयों की जड़ है, तुम अपनी बरबादी ही करोगे। जब पैसा, लोगों के लिए आपसी व्यापार का साधन बनना बंद हो जाता है तो आदमी ही आदमी का साधन बन जाता है। एक ओर खून, चाबुक, बंदूकें और दूसरी ओर डॉलर। अपनी पसंद चुन लो- इसके अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है और समय तुम्हारे हाथ से निकलता जा रहा है।"

उपरोक्त आलेख एईन रेंड लिखित एटलस श्रॉग्ड © कॉपीराइट 1957, से लिये गए अंश हैं।

लिबर्टी इंस्टीट्यूट
सी-4/8 सहयाद्री, प्लॉट 5, सेक्टर 12
द्वारका, नई दिल्ली 110075, भारत
टेलीफोनः 91-11-28031309
ईमेलः info@libertyindia.org, libertyinstitute@gmail.com

Liberty Institute
C-4/8 Sahyadri, Plot 5, Sector 12,
Dwarka, New Delhi 110078. India
Tel: 91-11-28031309
Email: info@libertyindia.org , LibertyInstitute@gmail.com

वेबसाइट / Websites
www.AynRand.in
www.InDefenceofLiberty.org
www.EmpoweringIndia.org